AMOGHVARTA
ISSN : 2583-3189

मुस्लिम रचनाकारों के राम

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. जया सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
कला एवं मानविकी विभाग
द आई सी एफ ए आई विश्वविद्यालय
कुम्हारी, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है कि 'रामहि केवल प्रेम पियारा'। राम को केवल प्रेम प्रिय है श्री राम का प्रेम सबको वशीभूत कर लेता है। 'राम' एक भारतीय शब्द है और हिन्दू कथा के नायक के रूप में स्थापित है। फारसी में भी 'राम' मुहावरा बने, जिसकी अर्थ है राम करस, अर्थात् किसी को वशीभूत करना अथवा अपना बना लेना।

मुख्य शब्द

राम, रचनाकार, हिंदू, मुस्लिम.

राम में फारसी साहित्यकारों को 'राम करदन' यानी अपना बना लिया है, परिणामस्वरूप अनेक रामायणें रची गई। संभवतः पहली बार अकबर के शासन काल में (1584–89) वाल्मिकी रामायण का फारसी में पद्यानुसार हुआ और शाहजहाँ के काल में 'रामायण फौजी' के नाम से गद्यानुवाद हुआ।

औरंगजेब के युग में चंद्रभान बेदिल ने फारसी में पद्यानुसार किया। तर्जूमा–ए–रामायण एवं अन्य रामायणों की रचना वाल्मिकी रामायण के आधार पर की गई किन्तु जहाँगीर के शासनकाल में मुल्ला मसीह ने 'मसीही रामायण' नामक एक मौलिक रामायण की रचना कि, पाँच हजार छंदों वाली इस रामायण के सन् 1888 में मुंशी–नवल किशोर प्रेस लखनऊ से प्रकाशित किया गया।

सन् 1864 में उर्दू में जगन्नाथ खुश्तर की रामायण 'खुश्तर', मुंशी शंकरदयाल 'फर्हत' का रामायण मंजूस बाँके बिहारी लाल 'बहार कृत' 'रामायण बहार' और सूरज नारायण मेह का रामायण मेह प्रकाशित हुई।

डॉ. कामिल बुल्के ने इन अनुवाद–रचनाओं को स्वतंत्र काव्य ग्रंथ कहा है। बाद के दौर में भी उर्दू लेखकों–शायरों ने इस परंपरा का निर्वाह किया।

गोस्वामी तुलसीदास के सखा,

अब्दुल–रहीम–खान–ए खाना ने कहा है–कि रामचरित मानस हिन्दूओं के लिए ही नहीं मुसलमानों के लिए भी आदर्श है।

रामचरित मानस विभल संतन जीवन प्राण
हिन्दुअन को वेदसम जमनहिं प्रगट कुरान

रायबरेली के मुस्लिम भक्त कविवर श्री अब्दुल रशीद खाँ रशीद एंव ऐसे कवि है, जिन्होनें आशु कविता के अतिरिक्त राम की खोज–खबर उपासना के स्वरो में ली है। श्री राम के चरणों में रशीद जी की उन पंक्तियों को लिख

रहे है, जो हमारी कृति–रामकथा और मुस्लिम साहित्कार में उन्ही की हस्तलिपि में श्री राम के चरणों में निवेदित है।

बड़े खुशामद प्रिय भये तुम्हहूँ हे अवधेश।
गिरयो विभीषण चरण पै ताहि कियो लंकेश।
तुमहूँ दुष्टन ते दबत गुप्त नहीं यह बात।
झारयो पोंछ्यों पगन कहँ जब भृगृ मारी लात।

दूसरे वयोवृद्ध बस्ती जनपद उत्तरप्रदेश के कवि 'वास' ने रामकथा के अचर्चित पात्र दशरथ की रानियों में महारानी 'सुमित्रा' का गुणगान किया है। कविवर भी अब्बास अली 'वास' की पैनी दृष्टि में कौशल्या और कैकयी की तुलना में सुमित्रा जी का और अधिक ध्यान दे जाने का कारण।

'वास' जी के शब्दों में शायद यह है–

''एक पूत राम बनबासी का उपासी बना।
दूसरा भगत भक्त भूषण भरत का।।
एक हरि सेवा में बनेवा बन–बन फिरा।
धारक अपन जन सेवा के बरल का।।

हिंदी–उर्दू की साझा संस्कृति साहित्य में समाज से किस प्रकार जुड़ी हुई है, इसकी एक बानगी।

जो खुदा तेरा वही तेरे प्रभु–श्रीराम है।
एक ही बात है कहने को फकत दो नाम है।।

इसी प्रकार कानपुर के युवा कवि असांर कंबरीकि 'मन में दिया जलाओ राम का' शीर्षक रचना की पंक्तियाँः

अपने मन में जलाओं दिया राम का,नाम लेते रहो बस सियाराम का।
नाम जिसने भी लिया मन से राम का।
यों समझिए कि वो हो गया राम का।।
लोकनिंदा न हो, त्याग दी प्रिय जानकी।
रूप ये भी दिखायी दिया राम को।
चाहे सागर हो, रावण हो या काल हो।
कम्बरी किसने क्या कर लिया राम का।।

अयोध्या–फैजावाद के कवि इस्लाम खॉ सालिक की रचना का शीर्षक 'बिछड़ गये है राम!' की–उक्त पंक्तियों में राम के बनवास जाने की आज्ञा दशरथ के सुनाने के बाद के दृष्य का वर्णन हैः

सुबहे बनारस ले सिसकारी,
राये अवध की शाय–बिछड़ गये है राम।
राजा ने जब वनवास सुनाया,
कैसे मन अपना समझाया।
एक रानी की मनमानी से,
जग में मचा कोहराम–बिछड़ गये हैं राम।।
सूनी–सूनी गलियॉ सारी,
बाग बगीचा बन फुलवारी।
सूनी है सगरी अयोध्या गनरी
सूने है चारों धाम–बिछड़ गये हैं राम।।

कवि संत रहीम ने अनेक राम कविताएँ भी लिखी हैं। अकबर के दरबारी इतिहासकार बदायूंनी– अनुदित

फारसी रामायण की एक निजी–हस्तलिपि प्रति रहीम के पास भी थी, जिसमें चित्र उन्होनें बनवाकर शामिल दिया, इस 50 आकर्षक चित्रों वाली रामायण के कुछ भाग फेयर आर्ट गैलरी वॉशिगंटन में अब भी–सुरक्षित है।

मुस्लिम देश इंहोनेशिया में रामकथा की–सुरभि सहज देखी जा सकती है। वास्तव में राम धर्म अथवा देश की सीमा से मुक्तएक विलक्षण ऐतिहासिक चरित्र रहे हैं। एक कवि जब कोई रचना करता है, तो वह धर्म,जाति, संप्रदाय को अपने बीच आने नही देता वह अपने भावों की अभिव्यक्ति का सृजन करता है– फरीद, रसखान, आलम रसलीन, हमीदुद्दीन नागौरी, ख्वाजा मोइनुददीन चिश्ती आदि कई रचनाकार हुए, जिन्होनें श्रीराम की काव्य पूजा की है। कवि खुसरों ने भी तुलसीदास जी से 250 वर्ष पूर्व अपनी मुकरियों में श्रीराम को नमन किया है।

प्रसिद्ध राष्ट्रीय शायर पद्मश्री–बेकल उत्साही की निम्न पंक्तियों में कितना भाव हैः

साकार हो तो भेद बता क्यों नहीं देते,
हे राम! हमें अपना पता क्यों नहीं देते?
हम कागजी रावन को जला देते हे हर साल,
तुम भीतरी रावन को मिटा क्यों नहीं देते?
जो लोग गरीबों को समझते है बहुत नीच,
शबरी के उन्हें बेर खिला क्यों नहीं देते?
मानवता जहाँ धर्म की साँसों की–महक हों,
ऐसा ही मेरा देश बना क्यों नहीं देते?

दतिया मध्यप्रदेश के कवि हादय नवीबख्श 'फलक' अपने समय के प्रसिद्ध रचनाकारों में से थे– वे हमेशा तुर्की टोपी लगाकर कवि सम्मेलनों में अपना परिचय देते– वे सुविख्यात पीताम्बरा पीठ दतिया की संदुर व्याख्या करते हुए कहते है– कि मं वहां का वासी हूँ–उनकी रचना 'अवधपुरी के नाथ' शीर्षक की रचना में राम–प्रेम का परिचय देते हुए लिखते है–राम लखन अऊ जानकी रोके बनहिं न जायँ। कठिन भूमि कोमल चरण, फलक पड़ेंगे पायँ।।

दशरथ वृदृ,राज्य भार को संभारिहै को,
कैसे फिर चौदह वर्ष कड़ पैहें नाथ।
कोमल चरण, बनभूमि है कठोर महा,
पाँयन में 'फलक' तिहारे पड़ जैहें नाथ।।
चलत कोर बन भूमि में, लक्ष्मन सीता साथ,
चरण सरोजन में 'फलक' पर रहो रघुनाथ।।

बस्ती जनपद के एक श्रमजीवी, जिनका नाथ रहमान अली 'रहमान' है, जो रिक्शा चलाते हुए कई काव्य कृतियों का प्रकाशन कर चुके है– अपनी कई विधाओं मे राम की गाथा की रचनाओं पर अपने लेखनी उकेरी है चंद पंक्तियों मे वे कहते हैः

कुछ भी फिकर मुझकों नहीं है राम की।
दिल में आस्था जब लगी श्रीराम की।।
गर जान भी ले ले जमाना ग्म नहीं,
जपता रहूँगा नाम मैं सुखधाय की।
इनकी सबसे चर्चित कृति है– 'कैकयी कथा'

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. नजीर मुहम्मद–अपना आत्मपरिचय देते हुए कहते हैंः

मैं मुस्लिम हूँ, मेरा मजहब सदा यही देता है ज्ञान।
देश प्रेय सर्वोच्च धर्म है, हुब्बुल वतने मिनल ईमान।।

कुरान मेरा धर्म–ग्रंथ, रामायण मेरा जीवन पथ है।
गीता और हदीसों भी पाया मैने जीवन रस है।।

इसी तरह डॉ. नजीर मुहम्मद ने केवट, अहिल्या, जरायू, भीलनी, शबरी, गिलहरी, रजक आदि के प्रसंगों को बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है जिससे उस राजतंत्र में लोकतंत्र की महत्ता को अभिव्यक्ति मिलती हैः

रामकथा में है बड़ा, महत्वपर्ण एक भाग।
लोराराधन के लिए, सीता का परित्याग।।
इक अनुसूचित जाति के व्यक्ति की अभिव्यक्ति।
सामाजिक–मत मानकर, तजी प्रिया अनुरक्ति।।
तनिक रजक के कथन पे, सीता पत्नी त्याग।
रामचंद जरिबे करे ग्लानि, विरह की आग।।
दलित जाति की भीलनी, ताके जूठे बेर।
खाए रूचि सों राम जी, प्रेम भाव कूँ हेर।।
सबरी भाव विभोर के, अमृतोपम बेर।
लक्ष्मन आँखि बचाइये,फेंके करी न देर।।
सीता–हरन संदेश है, तजे गीध मे प्रान।
स्वयंश्राद्ध कर राम ने, दियो पिता सम मान।।
वन–गमन के समय ही, सरयू तट को पाय।
आ अनूसुचित जाति के, केवट करी सहाय।।

कवि भी फैयाज अहमंद परवाना प्रतापगढ़ी अवध क्षेत्र के सशक्त कवि है, इनकी नवप्रकाश्य काव्यकृति 'राम रसायन' पर अनेक मनीषियों–ने प्रंशसा की –उसकी कुछ पंक्तियों यहा उद्धृत है प्रसंग–भगवान राम के वनगमन काल में उनका रूप–स्वरूप देखकर ग्रामीण नर–नारी धन्य होते है। बधुटियाँ परस्पर में उनके सुंद्र रूप का मनमोहक चित्रण करती है– उसे कवि ने बड़े सुंदर ढंग से कहा हैः

एक सखी दूसरी सखी से, कुछ बोलत की सरमाय रही।
तिसरी कै न कंठ खुला, तनिकौ।
धरती–पे गिरी मुरझाय रही।।
अस सुंदर रूप न देखा कतौं, देहियां–देहियां सिहराय रही।
सुकुमार सरीर सुशोभित, कर तीर–कमान सोहाय रही।।

जिस प्रकार बिना सीढ़ी के अट्टालिका पर चढ़ना दुष्कर है ठीक उसी प्रकार एक साहित्यकार की दृष्टि मे रामदूत हनुमान के बिना राम तक पहुँचना मुश्किल है तभी परवाना जी ने अपने शब्दों में भाव पिरोये हैः

प्रभुराज सिया अवधेसपुरी, श्री मानस–वेद पुरान की जै।
जन मानस के इस प्रेम की भी, श्री राम –कथा–रसयान की जै।
एक साथ कहैं सब लोग यही, इस भारत देश महान की जै।
परवाना पुकारे यही मन से, बजंरग बली हनुमान की जै।

चित्रकूट और अब्दुर्रहीम खानखाना एक –दुसरे के पर्याय बन चुके है। सैकड़ो वर्षो बाद भी ये पंक्तियों उनकी जन–जन का कंठहार हैंः

चित्रकुट में रमि रहे, रहिमन अवध नरेश। जापर विपदा परत है, सो आवत यहि देश ।।

भगवान राम पर रहीम जी की कितनी श्रद्धा थी, वह निम्न पंक्तियों से प्रकट होता है।

दुख नर सुनि हांसी करैं, नाहि धरावत धीर।
कहीं सुनै सुन दुख हरैं, रहिमन वे रघुवीर।।

श्री रामधारी सिंह दिनकर, ने 'रहीम' के विषय में उचित ही कहा हैः

अपने धर्म और आध्यात्मिक विश्वास पर सुदृढ़ रहकर भी–मुसलमान कितना अधिक भारतीय हो सकता है, रहीम इसके ज्वलंत प्रमाण है।

प्रथम रामायण मेला के समापन भाषण में तत्कालीन महामहिम राज्यपाल अकबर अली खॉ ने कहा–'मेरा भाग्य है कि आप लोगों के बीच पवित्र भूमि चित्रकूट में हूँ' रामायण के सिद्धातों को हम जीवन में उतारें जिंदगी में लायें। सभी–इंसान समान है–यही पैगाम तुलसी का है। यही संदेश रामायण का है। इसी भावना से मैं रामायण और तुलसी को प्रणाम करता हूँ।

भगवान की लीलास्थली–चित्रकूट को दीन मुहम्मद 'दीन' की पंक्तियों में देखा जा सकता है।

अवध अयोध्या से भी पावन है चित्रकूट, प्रकृति ने सुषमा समूची ही बिखेरी है। कल–कल स्वर है मंदाकिनी पयस्बनी का, गूंजे–ध्वनि राम–सीता मठ मे धनेरहिं।

सिया–राम–लखन, पवन–सुत संग–संग। पुरे चित्रकूट को प्रणाम है।

सन् 1680 कों प्रकाशित रामायण के उर्दू अनुवाद की लोकप्रियता का यह आलय रहा है कि आठ साल में उसके 16 संस्करण प्रकाशित हुए। वर्तमान में भी अनेक उर्दू रचनाकार राम के व्यक्तित्व की खुशबू से प्रभावित है। अपने काव्य के जरिए उसे चारों तरफ बिखेर रहे हैं। लखनऊ के मिर्जा हसन नासिर लेखक के पत्र मित्र हैं–उन्होंने श्री राम–स्तुति में लिखा हैः

कजं–वदनं दिव्य नंयन मेधवर्णं सुन्दंर।
दैत्यं–दमनं पाप–शमनं सिन्धु तरणं ईश्वरं।।
गीध मोक्षं शीलवन्तं देवरत्नं शकरं।
कोशलेशम शांतवेशं नासिरेशं सिय वरम्।।

रामायणी दाऊद ने अपना पहला प्रवचन 1947 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में दिया था। रामकथा वाचन की प्रेरणा उन्हें छत्तसीगढ़ के प्रसिद्ध साहित्कार डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी और सालिक राम द्विवेदी से मिली। उनके साहित्य में रकहर दाऊद खॉ ने रामायण, कुरान, गुरूग्रंथसाहिब, बाईबिल और गीता सहित कई धर्मग्रंथों का गहन अध्ययन किया। श्री रामचरित मानस के प्रति उनमें अटूट आस्था थी। रामायण के छोटे–छोटे प्रसंग को वे इतने मनोंरजक रूप से प्रस्तुत करते रहे कि श्रोता भाव विभोर हो जाते। संस्कृत, उर्दू, हिन्दी, छत्तीसगढ़ी, भाषा पर उनका समान अधिकार था। रामकथा के रस साहित्य में सराबोर हो नथूर वाहिदी लिखते हैः

1. तुलसी जी के सुंदर सपने संत कबीर के पास कहां।
2. मन मंदिर के बंद परों में जीवन का इतिहास कहां।
3. ध्यान नजर में प्रेम नगर में सीता का वनवास कहां।

डॉ.जलाल अहमद खां 'तनवीर' रामचरित मानस जैसे महाकाव्य और तुलसीदास के विषय में सहजता से लिखते है।

कर रहे हैं हर अधर, गुणगान सीता राम के, चल। रही हर और चर्चा राम ही अविराम है।।

इकबाल की कविताएँ

मोहम्मद इकबाल ने राम को आदर्श मानवता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाओं में राम का उदाहरण लेते हुए उन्होंने नैतिकता और मानवता के मूल्यों पर जोर दिया है।

इकबाल की कविताएँ राम पर विशेष रूप से उनकी भारतीय संस्कृति और धार्मिकता के प्रति गहरी समझ को दर्शाती हैं। उन्होंने इकबाल ने राम के प्रति अपनी श्रद्धा को कई पंक्तियों में व्यक्त किया है। उनकी कविता में एक जगह वे राम का उल्लेख करते हैं। यहाँ एक प्रसिद्ध पंक्ति का संदर्भ दिया जा सकता हैः

''राम के नाम से भी हो जाती है ताजगी...''

''राम की सदा पर चलो, हर दिल में जोश भरे...''

यह पंक्ति राम के आदर्शों को जीवन में अपनाने की प्रेरणा देती है, जो साहस और संघर्ष का प्रतीक हैं।

''जो राम का है, वो बुराई का नहीं...''

यहाँ इकबाल यह बताते हैं कि राम का मार्ग सदैव सत्य और नैतिकता की ओर ले जाता है।

''राम की महिमा का कोई पार नहीं...''

इस पंक्ति में वे राम की महानता और उनके संदेश को असीमित बताते हैं।

इकबाल की कविताओं में राम को केवल एक धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि मानवता और उच्च नैतिकता का आदर्श मानते हुए देखा जाता है। इस तरह की पंक्तियाँ उनके जीवन दृष्टिकोण और राम के आदर्शों के प्रति उनके सम्मान को दर्शाती हैं। राम को एक आदर्श व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया, जो मानवता, धर्म, और नैतिकता का प्रतीक है। उनकी रचनाओं में राम की महानता और उनके सिद्धांतों का उल्लेख मिलता है। इकबाल का मानना था कि राम का जीवन और उनके गुण हमें प्रेरित करते हैं, और उनका संदेश आज भी प्रासंगिक है।

किरन नादिर

उन्होंने अपनी कविताओं में राम और रामायण के तत्वों का समावेश किया है, जिसमें उन्होंने राम को एक किरन नादिर ने राम को अपनी कविताओं में एक गहरी संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है। उनकी कविताओं में राम के आदर्श और भारतीय संस्कृति का मूल्यांकन किया गया है। एक प्रसिद्ध कविता में वह लिखती हैंः

''राम के चेहरे पर एक सच्चाई है,
जो हर युग में हमें रास्ता दिखाती है।''

यह पंक्ति राम की नैतिकता और उनके जीवन के आदर्शों को व्यक्त करती है, जो सभी समयों में प्रासंगिक हैं।

न्यायप्रिय और आदर्श व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया है।

ये रचनाएँ न केवल राम के प्रति मुस्लिम रचनाकारों की दृष्टि को दर्शाती हैं, बल्कि वे सांस्कृतिक संवाद और साझा विरासत के प्रतीक भी हैं।

मुस्लिम रचनाकारों ने राम को अपनी रचनाओं में विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रस्तुत किया है। उनके लेखन में राम केवल एक धार्मिक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक आदर्श और सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में दिखाई देते हैं। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं में सारांश प्रस्तुत किया गया हैः

1. **आदर्श और नैतिकताः** मुस्लिम रचनाकारों ने राम को नैतिकता, धर्म और मानवता के प्रतीक के रूप में चित्रित किया है। राम का जीवन धैर्य, साहस, और सत्य के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
2. **सांस्कृतिक पहचानः** राम की कहानी और उनके आदर्शों को भारतीय संस्कृति के एक अभिन्न हिस्से के रूप में स्वीकार किया गया है। रचनाकारों ने यह दिखाया है कि राम की महिमा केवल हिंदू धर्म तक सीमित नहीं है, बल्कि वह सभी भारतीयों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।
3. **सामाजिक समरसताः** कई मुस्लिम लेखकों ने राम के माध्यम से हिंदू–मुस्लिम एकता और सामाजिक समरसता की आवश्यकता पर जोर दिया है। राम को एक ऐसे व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो विभिन्न समुदायों के बीच पुल का काम कर सकता है।

4. **आध्यात्मिक दृष्टिकोण:** कुछ रचनाकारों ने राम को एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में देखा है। उनकी शिक्षाएं मानवता के कल्याण के लिए महत्वपूर्ण हैं और सभी धर्मों के अनुयायियों के लिए प्रासंगिक हैं।

निष्कर्ष

मुस्लिम रचनाकारों ने राम को अपनी रचनाओं में एक जटिल और बहुआयामी व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया है। राम केवल एक धार्मिक प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे नैतिकता, मानवता, और सांस्कृतिक समरसता के आदर्श भी हैं।

आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टिकोण: राम का जीवन और उनके आदर्श सभी धर्मों के अनुयायियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। उनकी शिक्षाएँ आज भी मानवता के कल्याण के लिए प्रासंगिक हैं।

सामाजिक समरसता: कई रचनाकारों ने राम के माध्यम से हिंदू–मुस्लिम एकता और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने का प्रयास किया है, यह दर्शाते हुए कि राम का संदेश सभी भारतीयों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है।

आलोचनात्मक विमर्श: कुछ लेखकों ने राम और रामायण की सामाजिक और राजनीतिक दृष्टियों की आलोचना की है, यह पूछते हुए कि क्या ये आदर्श वास्तव में समाज में समानता और न्याय को सुनिश्चित करते हैं।

सारांशिक रूप में मुस्लिम रचनाकारों के राम पर दृष्टिकोण केवल साहित्यिक नहीं है, बल्कि यह धार्मिक और सामाजिक विमर्श में एक महत्वपूर्ण योगदान भी देता है, जो एक समृद्ध और समावेशी समाज के निर्माण में सहायक है।

सन्दर्भ सूची

1. दैनिक नवभारत, 21 अगस्त, 2012।
2 दैनिक नवभारत, 5 फरवरी, 2017।
3. दैनिक जागरण, 11 सितम्बर, 2009।
4. https://zeenews.india.com/hindi/zeesalam/muslim-news, Accessed on 02/07/2024.
5. https://zeenews.india.com/hindi/zeesalam/, Accessed on 03/07/2024.

——==00==——